RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2021-23

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 5 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 10 जुलाई 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

चौमास

कठिन समय बरसात का

- उत्तराखण्ड पर्वतीय मार्गों पर संभल कर चलना है, टूट कई हुई
- कांबड़ यात्रा के कारण रुट डाइवर्ट, हरिद्वार सहित जाम ही जाम
- जागेश्वर सहित शिवालयों में श्रद्धालुओं की यात्रा से चहल-पहल
- हरेला त्यौहार की तैयारी, वृक्षारोपण व रोपाईगाड़ में जुटे ग्रामीण
- बरसात नैनीताल को ज्यादा डरा रही है, एनडीआरएफ को जिम्मा
- शहरों में जलभराव से आफत मचने लगी, कंट्रोल रूम स्थापित

कार्यालय प्रतिनिधि

मानसून की शुरुआत से ही इस बार उत्तराखण्ड डबडबाने लगा है। शामा मार्ग में हुए दो हादसों में जिस प्रकार से मौत का ताण्डव हुआ वह यहाँ की सड़कों का हाल बता रहा है। दुर्घटना का कारण चाहे जो भी रहा हो लेकिन यह भी सच है कि होकरा को जाने वाली सड़क आज तक खस्ता है। इसी प्रकार कई महत्वपूर्ण सड़कों का हाल है। ऊपर से मानसून हो तो हम सबके लिये जरूरी है सावधानी के साथ पहाड़ की यात्रा की जाए। पर्वतीय मार्गों पर कई जगह भूस्खलन के कारण टूटफूट हुई है। मानसून की पहली बारिश में ही जन-जीवन अस्त-व्यस्त होने लगा था। सीमान्त क्षेत्र कपकोट के झूनी स्थित पांखूटॉप बुग्याल में बिजली गिरने से चार सौ से अधिक बकरियों की मौत हो गई।

बरसात जरूर अपना रंग दिखाएगी लेकिन तीज-त्यौहारों का उफान भी कम नहीं है। पहाड़ का प्रसिद्ध हरेला त्यौहार सामने है और इसकी तैयारी भी हो रही है। भीमताल सहित तमाम जगहों पर इस मौके पर मेला भी होगा। सरकारी व निजी वृक्षारोपण कार्यक्रम भी जगह जगह हो रहे हैं। घाटियों में धान की रोपाई का समय भी यही है तो खेतों में ग्रामीण मेहनत करते दिखाई दे रहे हैं। कत्यूर घाटी, सोमेश्वर, गरुड़, द्वाराहाट, बागेश्वर, सेरा क्षेत्र बग्वालीपोखर तमाम जगहों पर रोपाई का शानदार नजारा दिखाई दे रहा है। प्रसिद्ध जागेश्वर धाम में श्रद्धालुओं का आना शुरु हो चुका है। इसके अलावा भी शिवालयों में श्रद्धालु जा रहे हैं। आने वाले दिनों में बग्वाल होगी तो इसके लिये देवीधुरा में माँ वाराही देवी मन्दिर समिति भी तैयारियों में जुटी हुई है।

कांबड़ यात्रा को देखते हुए हरिद्वार सहित प्रमुख हाईवे में जाम होने लगा है। ऐसे में प्रशासन ने रुट डाइवर्ट कर मोर्चा संभाल रखा है। दून-मेरठ-दिल्ली हाईवे पर चलने वाली बसों को इन दिनों में घूमकर आना-जाना है। चारधाम यात्रा मार्गों पर भी जाम से निजात पाने के लिये कर्मचारी तैनात हैं। शहरों में हो रहे जलभराव की चिन्ता भी है। हरिद्वार के कनखल सहित कई जगह शुरु से ही जलभराव हो चुका है। जिला प्रशासन ने कंट्रोल स्थापित करते हुए सभी से सावधान रहने को कहा है। नदी तट क्षेत्रों पर रहने वालों को विशेष सतर्कता के लिये कहा गया है। चम्पावत प्रशासन ने टनकपुर, बनबसा शारदा नदी इलाके पर जाने के लिये मना किया है और रहने वालों को हटाया गया है। पूर्णागिरी मार्ग पर भी बरसात के दिनों में खतरा बना रहता है।

सीमान्त की सड़कों पर बहुत ही सतर्क रहना है क्योंकि कभी भी मलबा-बोल्डर आने से अवरुद्ध हो सकती हैं। धारचूला के सोबला ढाकर सड़क पर मलबा आने से बार-बार दिक्कत हो रही है। थल-मुनस्यारी मार्ग पर रातापानी के पास मलबा गिरने का खतरा है।

बरसात नैनीताल जिले को ज्यादा ही डरा रही है। ऐसे में एनडीआरएफ को आपदा के समय का जिम्मा दिया गया है। मानसून में रामनगर का कॉर्बेट पार्क के बिजरानी, गर्जिया जोन और सीतावनी, कार्बेट फॉल को पर्यटकों के लिये बन्द कर दिया गया है। इससे पहले कार्बेट का ढिकाला जोन 15 जून को ही बन्द कर दिया गया था। नैनीताल शहर की बात करें तो नैनीताल-किलबरी रोड पहली ही बरसात में दरक चुकी है। जिससे किलबरी, पंगोट, घुग्घुखान समेत समेत कई गाँवों में आवाजाही पर परेशानी है। काठगोदाम-हैड़ाखान मार्ग पर हल्द्वानी शहर में प्रशासन ने अतिक्रमण हटाते हुए नाली-नालियां खुलवाने का दावा किया है लेकिन शनिबाजार का नाला चोक होने से कचरा फैल गया। वर्कशॉप लाइन की रोड उखड़ चुकी है। मानसून सीजन के लिये जिला प्रशासन ने जिले के अतिसम्वेदनशील क्षेत्रों में राहत व बचाव के लिये नेशनल डिजास्टर रिस्पांस फार्म की तैनाती की है। पहली बार यह तैनाती है, जिसमें 23 सदस्य हैं। इससे पहले जरूरत पड़ने पर इन्हें बुलाया जाता था। यदि कहीं पर आपदा आती है तो एनडीआरएफ की टीम त्वरित राहत व बचाव में जुटेगी।

सत्ता नष्ट और भ्रष्ट करती है

अरुण तिवारी

महात्मा गांधी का कथन था कि सत्ता नष्ट और भ्रष्ट करती है। नीतीश कुमार ने एक बार कहा था कि रिटायरमेंट के बाद सब आईएएस सन्त हो जाते हैं। इधर पिछले दिनों नमामि गंगे से जुड़े एक शीर्षस्थ आईएएस अधिकारी से मैने यूं ही पूछ लिया कि गाँवों द्वारा किए छोटी नदियों के पुनर्जीवन के कामों से क्या सरकार कुछ सीख सकती है?

'सुनत बचन उपजा मन क्रोधा। माया बस न रहा मन बोधा।' वह गुस्सा हो गए। उन्होंने कहा कि एनजीओ वाले बाहर बैठकर हल्ला करते रहते हैं, भीतर रहकर पता चलता है। इस पर मैंने कहा कि मेरा कोई एनजीओ नहीं है। मैं एक आज़ाद लेखक-पत्रकार हूँ तो उन्होने साफगोई दिखाई- तिवारी जी, मैं सीख सकता हूँ, सरकार नहीं। सरकार बहुत बड़ी होती है।

इन सब कड़ियों में बनारस के गांधी विद्या संस्थान की इमारत पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कब्जे की पटकथा को जोड़कर देखें तो प्रमाणित होता है कि जब राज आता है तो उसके साथ राजरोग भी आता है। मात्र इन सन्दर्भों से ही संकेत मिल जाता हैं कि गांधी विद्या संस्थान कब्जा प्रकरण में कौन-कौन, कहाँ-कहाँ और क्यों नष्ट या भ्रष्ट हुआ है। यूं ही नहीं कहा जाता कि सत्ता चाहे परिवार की हो, नगर-गाँव-संगठन की, व्यापार की अथवा सरकार की, सत्ता का भाव आ जाने मात्र से ही हम नष्ट और भ्रष्ट होना शुरू हो जाते हैं। आखिरकार यह सत्ता भाव ही तो है, जिसके कारण सम्पूर्ण क्रान्ति आन्दोलन के भीतर से लोकतंत्र की रक्षा खातिर खम्भ ठोक कर डट जाने वाले भी निकले तो चारा खाने वाले भी।

राजरोगियों की रज़ामंदी- गांधी मार्ग के सम्पादक रहे स्व.अनुपम मिश्र ने नदी जोड़ परियोजना के खिलाफ एक लेख लिखा था। लेख का शीर्षक था- राजरोगियों की रज़ामंदी। लेख की शुरूआत में ही लिखा था कि अच्छे लोग भी जब राज के नज़दीक पहुँचते हैं तो उनको विकास का रोग लग जाता है, भूमण्डलीकरण का रोग लग जाता है। उन्होंने इसे प्रमाणित करती एक घटना का जिक्र किया था। घटना यूं थी कि कर्नाटक में वेड्थी नदी पर बांध बनाया जा रहा था। किसानों को आशंका हुई कि बांध बनने से खेती का चक्र बिगड़ जाएगा। उन्होने डटकर विरोध किया। लगातार पाँच साल तक आन्दोलन चला। रामकृष्ण हेगड़े, उस आन्दोलन के एकछत्र नेता रहे। यह नेता भाव, उन्हे सत्ता में ले आया। मुख्यमंत्री बनने के बाद हेगड़े वेड्थी बांध के पक्ष में हो गए।

अनुपम जी ने इसे राजरोग का उदाहरण बताते हुए इस राजरोग का इलाज भी बताया था। लिखा था- हेगड़े के पाला बदलने के बावजूद किसानों का आन्दोलन चलता रहा। हेगड़े का राज चला गया। उनका राजरोग भी चला गया। आन्दोलन के कारण वह बांध आज तक नहीं बन सका।

सम्मेद शिखर, जालियांवाला बाग, साबरमती आश्रम, श्री अरविन्द आश्रम (पुदुचेरी), बद्रीनाथ, केदारनाथ- ये सभी हमारी आस्था व विचारों की विरासत के तीर्थ हैं। तीर्थों पर तीर्थभाव को तिरोहित कर पर्यटन बढ़ाने और पैसा कमाने की परियोजना बनाना, एक तरह विकास का राजरोग है। तेज़ हॉर्न की आवाज़ से लुड़क जाने वाली कंकड़ी के नम पहाड़ में वोल्वो दौड़ाने लायक सड़क बनाना सामान्य मनोदशा तो नहीं ही कही जाएगी। पूरे देश में एक ही पार्टी, एक ही रंग और एक ही विचार के लोग राज करेंगे। बाकी को तोड़ना-फोड़ना, दुश्मन मानकर नष्ट करने पर उतारू हो जाना(यह दूसरे तरह का राजरोग है। ...तो क्या समझें कि जब नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री नहीं रहेंगे या बीजेपी सरकार में नहीं रहेगी तो यह राजरोग चला जाएगा?

हाँ, राज जाने से राजरोग भी चला जाता है।

हो सकता है कि बीजेपी केन्द्र की सरकार में न रहे तो गांधी विद्या संस्थान की इमारत, उसे वापस मिल जाए। मोदी नीत सरकार न बताती है और न सुनती है। उसे जो बताना है, वह वही बताती है। उसे जो करना है, वह वही करती है। कहते हैं कि सवालपूछी होने से जवाबदेही आती है। लेकिन वह जवाबदेही की जगह ईडी, सीबीआई, इनकम टैक्स और पुलिस ले आती है। इस डर ने लम्बे समय तक उन सभी को चुप रखा, जिनके जीवन का कुछ न कुछ

शेष पृष्ठ 2 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

पुस्तकों से दोस्ती करते ही कई समस्याएं हल हो जाती हैं

बीते दिनों मुनस्यारी यूथ वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा संघ लोक सेवा आयोग से चयनित साक्षी बिष्ट और मीनाक्षी आर्य के साथ युवाओं का सम्वाद कराया। इसका मुख्य उद्देश्य यही था कि युवा अपने बीच के मेधावियों से सीख सकें कि वह किस प्रकार से अपने भविष्य को लेकर तैयारी करते हैं। इस पूरे कार्यक्रम में साक्षी व मीनाक्षी ने अपनी पढ़ाई व तैयारी को लेकर बताया। साथ ही चर्चा पुस्तक और पुस्तकालयों पर भी हुई।

वर्तमान में देखने में आ रहा है कि ९५ प्रतिशत लोग मोबाइल फोन के साथ अपना समय व्यतीत कर रहे हैं। सोशल मीडिया के तमाम मंचों पर मची अन्धीदौड़ में शामिल युवा भटकाव के रास्ते पर हैं। आयकर आयुक्त नरेन्द्र जंगपांगी व डा.ठाकुर सिंह मपवाल ने युवाओं को उन रास्तों को तलाशने के उपाय बताए जिससे भविष्य उज्जवल हो। हरीश धर्मशक्तू ने जोहार मिलन केन्द्र हल्द्वानी के पुस्तकालय का उल्लेख करते हुए कहा करीब ढाई हजार पुस्तकें इसमें हैं लेकिन पढ़ने वालों की संख्या न्यून है। इसी प्रकार का हाल दरकोट व अन्य जगह पुस्तकालयों में हैं। उन्होंने कहा कि विभिन्न प्रकार की तैयारी कर रहे युवा अपने पाठ्यक्रम के अलावा कुछ न कुछ अवस्य पढ़ते लिखते रहें। पुस्तकों से दोस्ती करते ही कई समस्याएं हल हो जाती हैं। डा. एन.एस.पांगती, भूपाल सिंह मर्तोलिया ने अपने अनुभव बताते हुए कहा कि कार्य के प्रति दृढ़ता जरूरी है। प्रेम सिंह जंगपांगी, नरेन्द्र टोलिया, जगत सिंह मर्तोलिया ने कहा रुचि के साथ अध्ययन भी जरूरी है। कुल मिलाकर पुस्तक और पुस्तकालयों को जितना कहा गया वह सच है क्योंकि सोशल मीडिया के अलावा वर्तमान में पुस्तक पढ़ने से ज्यादा मेले लगने लगे हैं। ऐसे मेले जिसमें सूटिंग-शाटिंग सा महसूस होता है और व्यवहार में बहुत कुछ रह जाता है। किताबें सजाने से ज्यादा पढ़ने-पढ़ाने को होनी चाहिये।

फसक

दाज्यू, चौमास के कौतिक भी गजब ठैरे

स्थानान्तरण के तूफान में कुछ को सहारा कुछ को रुवाई मिली बल

दाज्यू, मानसून की शुरुआत ही ताबड़तोड़ हुई है। लग रहा है 2024 के चुनाव का अभ्यास खूब होगा। गाँव वाले मन्दिर में कथा में खूब थिरके- 'दय्या पी गये सरा ऽराऽराऽराऽ'। दाज्यू, किसी से कुछ नहीं कहना है। खूब थिरकने दो, चरम का नन्द और परम आनन्द की स्थिति सबकी अपनी ठैरी। चौमास के कौतिक भी गजब ठैरे। भूसा सिंह बहुत गुस्से में है क्योंकि इस बार के स्थानान्तरण में भी उनका नाम नहीं आया। कह रहे हैं हजारों स्थानान्तरण हो गये लेकिन शहर के चौड़े मैदान वाले कालेज में वर्षों से पैर जमा रखे मैडम को कोई नहीं हटा पा रहा है। विक्कर सिंह कह रहा था- 'जब तक वह साहब का व्रत रहेगा, कुछ नहीं हो सकता। शासन में बड़े पद पर थे साहब और रिटायरमेंट के बाद भी दोनों हाथों से आशीर्वाद बनाये हुए हैं।' दाज्यू, आप जानने ही वाले हुए कि ऋषि मुनियों का आशीर्वाद जिसको मिल जाए वह खमाखम चलने लगता है। इस बार भी स्थानान्तरण के तूफान में कुछ को सहारा कुछ को रुवाई मिली बल। विवादों से चर्चा में रहने वाले मृत्युंजय कुमार मिश्रा की रंगत बनी हुई है। आयुर्वेद विश्वविद्यालय के कुलसचिव मिश्रा को ओएसडी आयुर्वेद निदेशलाय बनाया दिया था। हो-हल्ला मचने पर उनकी तैनाती रद्द कर दी गई। दाज्यू, सत्य वचन, सबका साथ सबका विकास होना बहुत कठिन हुआ। देहरादून में सीएम की उपस्थिति पर बूथ मजबूती को लेकर हो रहे कार्यक्रम में भाजपा कार्यकर्ता एक-दूसरे पर लात-घूसें चलाने लगे। किसको क्या कहते हो। विकास यात्रा में लात-घूसों की गिनती कौन करे? पूर्व मंत्री हरक सिंह रावत इन दिनों फिर से गुल्लड़-बुल्लड़ कर रहे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत की तारीफ भी हरक ने की है। दाज्यू, राजनीति पूरी तरह खिलन्दरबाजी ठैरी। नेताओं की चकबक सभी जानने वाले हुए। हरक सिंह भी इसमें अग्रणीय ठैरे।

2016 में स्टिंग आपरेशन का मामला अभी तक गरमाया हुआ है। हरदा कह रहे हैं- 'यह सब 2024 के चुनाव को लेकर किया जा रहा है।' दाज्यू, हम तो पहले से कह रहे हैं कि जितना कुछ हो रहा है सब 2024 को लेकर ही हो रहा है। अरे, अब हो जाने दो जो होने जा रहा है। जब बरसात है तो कचार होगा ही। समान नागरिक संहिता को लेकर प्रदेश मचल रहा है।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

सत्ता नष्ट और भ्रष्ट.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

प्रत्यक्ष तौर पर सरकार के नियंत्रण में हैं। आप राजनेता हैं तो आपको आपकी पिछली फाइल दिखाई जा सकती है। अनुदान आधारित नागरिक संगठन है तो आपको प्राप्त अनुदान और किए खर्च पर जाँच बैठाई जा सकती है। आप पत्रकार हैं तो आपके मालिक को धमकाकर आपकी नौकरी छीनी जा सकती है। आप व्यापारी हैं तो आपकी टैक्स फाइल खोली जा सकती है। आप उद्योगपति हैं तो आपके उत्पाद के नमूने उठाकर सही को ग़लत बताकर फंसाया जा सकता है। हो सकता है कि मोदी नीत सरकार के जाने से यह डर खत्म हो। बुलडोजर और भरी कोर्ट में गोली की जगह संविधान सम्मत न्याय हो। हो सकता है कि तब गरीब-अमीर की खाई पाटने के कुछ संजीदा प्रयास हों। निजी ठेकेदारी बढ़ाने की जगह, स्थाई रोज़गार सृजित करने की दशा में कुछ कदम आगे बढ़ें। किन्तु क्या इससे राज और राजरोग चला जाएगा?

क्या हो राजरोग मिटाने का औजार?

कोई कह सकता है कि राज जाने का मतलब, किसी व्यक्ति या दल का सरकार से हट जाना ही है। आजकल प्रयास भी यही चल रहा है। देश का एक बड़ा वर्ग एकजुट हो रहा है। राजनीतिक दल एकजुट हो रहे हैं। नागरिक संगठनों में एकजुट होने की कोशिश कर रहे हैं। लोग भी दलों में खड़े हैं और सर्व समुदाय के लिए काम करने वाले सामाजिक संगठन भी। पत्रकारों में भी लामबन्दी नज़र आ रही है। यह सारी लामबन्दी एक ही सूत्र पर आधारित है कि 2024 में मोदी को सत्ता से हटाना है। क्या वोट ही राजरोग दूर करने का एकमात्र औजार है?

सोचिए कि यदि गांधी जी जिन्दा होते तो क्या वह भी यही करते या वह कहते- 'नहीं भाई, इससे बात नहीं बनेगी। दलों के पक्ष-विपक्ष में खड़े होना, वोटर का काम है। वह करे।' जब मैं खुद जन प्रतिनिधियों को जनता से कटे तथा ऐसे व्यवहार करते देखता हूँ कि जैसे वे किसी अन्य लोक के प्राणी हों तो यह विश्वास और अधिक दृढ़ हो जाता है कि बात बनेगी तो मुद्दे के पक्ष-विपक्ष में कमर कसकर खड़ा हो जाने से। मुद्दा क्या है? मुद्दा है कि राजरोग खत्म हो। मेरी राय है कि किसी व्यक्ति अथवा दल के आने-जाने से राजरोग की पकड़ कमज़ोर अथवा मज़बूत तो पड़ सकती है, लेकिन हमेशा के लिए खत्म नहीं हो सकती। सम्पूर्ण क्रान्ति आन्दोलन के बाद कांग्रेस गई, जनता पार्टी के नेतृत्व वाली सरकार आई। क्या हुआ? यदि राजरोग को जड़ से निपटाना है तो इस राज और नेता... दोनों के भाव को ही लोकतंत्र से हमेशा के लिए बाहर करना होगा। राजनीति और राजनेता- राज का भाव पैदा करते हैं। इसका इससे अधिक पुख्ता प्रमाण क्या हो सकता है कि जो स्वयं प्रतिनिधि हैं, उन हमारे सांसदों ने अपने-अपने क्षेत्र में सांसद प्रतिनिधि नियुक्त कर लिए हैं। स्पष्ट है कि राजनीति और राजनेता को हटाकर लोकनीति और लोक प्रतिनिधि वाले भाव के लिए जगह बनानी होगी।

नेता नहीं, प्रतिनिधि बनाइए- हमें खुद समझना होगा कि नेता अगुवा होता है। उसके पीछे उसके अनुयायी होते हैं। नेता जो कहता है, अनुयायी वह करते हैं। लोक प्रतिनिधि अगुवा नहीं होता। लोक प्रतिनिधि, लोगों द्वारा लोगों का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना अथवा नामित किए जाता हैं। प्रतिनिधि का काम होता है कि वह जिनका प्रतिनिधि है, उनके निर्णय की पालना करे। उनके विचार को... प्रस्ताव को आगे बढ़ाये। उनकी आवाज़ को पुरजोर तरीके से जहाँ उठाना है, उठाये। अत: हमें अपने प्रतिनिधियों को नेता, राजनेता व अधिकारी कहना बन्द करना होगा। वह समझें कि विधायी, शासकीय अथवा प्रशासनिक कार्य के लिए इलेक्ट अथवा सेलेक्ट होना, राजयोग नहीं है। यह जनसहयोग है।

विधायी प्रतिनिधि सभाओं की बात करूं तो लोकनीति और लोकप्रतिनिधित्व के भाव के मार्ग में एक बड़ी बाधा चुनावों का दलगत होना है। चुनावों के दलगत् होने ने सामुदायिक भाव व सद्भाव को बुरी तरह तोड़ दिया है। चुनावी मशीनों पर से दलों के निशान हटा देने चाहिए। चुनावी व्यवस्था तोड़क की बजाय, जोड़क कैसे बने, ऐसे बदलाव करने चाहिए। हमारे पंच, प्रधान, विधायक व सांसद इन्हे चुनने वाले लोगों के प्रतिनिधि होते हैं। किन्तु सदन में पहुँचकर लोगों के ये प्रतिनिधि, दलों के प्रतिनिधि के तौर पर व्यवहार करते हैं। दलगत व्हिप जारी करने का प्रावधान, बची-खुची सम्भावना को नष्ट कर देता है। हमें समझना चाहिए कि जिन्हे लोगों ने अपने प्रतिनिधि के रूप में चुन लिया, वे लोगों के प्रतिनिधि हैं। मंत्री-प्रधानमंत्री सरकार के प्रतिनिधि होते हैं। अत: बाध्य करना होगा कि इन सभी को क़ानून बनाकर प्रतिबन्धित कर दिया जाये ताकि ये लोक, सरकार, सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनी अथवा स्वायत्त संस्था का प्रतिनिधि रहते हुए किसी दल के निशान, बैठक, पद, चंदा व प्रचार में हिस्सेदार न बने। साथ ही साथ हमें लोक उम्मीदवार, लोक घोषणापत्र, लोक नियोजन, लोक अंकेक्षण और लोक निगरानी तंत्र के विकास की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की कोशिशें जारी रखनी चाहिए। पंचायत व नगर निगम/पालिका के स्तर पर वार्ड सभाओं का गठन कर उन्हे प्रतिनिधियों पर नियंत्रण व उसे सहयोग की जवाबदेह संस्था के रूप में विकसित करना चाहिए। हमें ऐसे हस्तक्षेप करने होंगे, ताकि प्रतिनिधि के अधिकार वैयद्रिक न होकर, जिसके वे प्रतिनिधि हैं, उस संस्था के सांस्थानिक हों। ये हस्तक्षेप, राजरोग को नष्ट करने का योग साबित हो सकते हैं।

यह कैसे होगा?- अनुपम मिश्र फिर मार्गदर्शन करते हैं। वह लिखते हैं कि यह दौर बहुत विचित्र है। इस दौर में सब विचारधारायें ओर हर तरह के राजनैतिक नेतृत्व में रजामंदी है विनाश के लिए। इस सर्वसम्मति के बीच हमारी आवाज़ दृढ़ता और संयम से उठनी चाहिए। जो बात कहनी है, वह दृढ़ता से कहनी पड़ेगी। हमें प्रेम से कहने का तरीका निकालना पड़ेगा। हमें अब सरकार का पक्ष समझने की कोई ज़रूरत नहीं है। उसे समझने में लगे तो ऐसी भूमिका हमें थका देगी। हम कोई पक्ष जानना नहीं चाहते। हम कह सकते हैं कि यह पक्षपात है देश के साथ, भूगोल के साथ, इतिहास के साथ। इसे रोको। प्रश्न है कि हम ऐसा हम कब कह सकेंगे?

अत्यन्त प्रबुद्ध और गम्भीर पत्रकार अरुण कुमार त्रिपाठी ने एक पोर्टल पर लिखे लेख में बनारस के गांधी वालों द्वारा चार कसमें खाने का उल्लेख किया है। गांधी, खादी और समाजसेवी संस्थाओं को सामने रखूं तो मैं कह सकता हूँ कि ऐसा वे तब कह सकेंगे, जब इनके संचालक बिना कसम खाए ही आइने को अपनी ओर घुमा लेंगे। तय करेंगे कि पद, पैसे और सुविधा के लोभ में इन्हे गांधी, खादी और सेवा कर्म का सत्यानाश नहीं करना चाहिए। जरूरी खर्च के लिए धन का इंतज़ाम किसी फंडिंग एजेन्सी से नहीं, जिसके लिए काम कर रहे हैं, उस लक्ष्य समूह से और अपने श्रम से अर्जित करेंगे। सामाजिक कार्य में कोई अधिकारी व कर्मचारी नहीं होता, सब समान सम्मानित कार्यकर्ता होते हैं। अन्तिम बात यह कि एकादश व्रत को सिर्फ पढ़े या पढ़ायेंगे नहीं, अपनाने की भरपूर कोशिश भी करेंगे। आखिरकार, अपने अन्तिम वक्त तक महात्मा गांधी भी तो यही कर रहे थे। कांग्रेस को लोक सेवक संघ के रूप में रूपान्तरित कर गांधी भी तो सत्ता भाव को तिरोहित करना चाहते थे। गांधी, इसीलिए तो खास थे, चूंकि वह वही कहते थे, जिसे वह बेहिचक कर सकते थे। किन्तु गांधी विद्या संस्थान ने अब तक यह नहीं किया। अब करे। इन सब बातों को मुझसे ज्यादा बेहतर, रामबहादुर राय खुद जानते हैं। वह कभी जनसत्ता में प्रभाष जोशी जैसे प्रखर सम्पादक के प्रखर सहयोगी रहे हैं। गांधी, विनोबा, जे पी और कृपलानी से लेकर मोदी मानस की अच्छी समझ रखते हैं। कम खर्च में जीवन चलाने में यकीन रखते हैं। अब उन्हे तय करना है कि वह विनोबा की मान भूदान से प्रेरित हों, ज़मीन को लेने का प्रस्ताव वापस लें। गांधी को मानकर सत्य के पक्ष में खड़े हो जायें। पश्चाताप करें, कुर्सी छोड़ें। गांधी-विनोबा-जे पी की विरासत को आगे ले जाने में सबसे आगे नज़र जायें अथवा अपने अगले कदम के रूप में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का नाम बदलकर अटल बिहारी बाजपेई जी के नाम को आगे बढ़ाने में जुट जायें। कला केन्द्र को हिन्दू राष्ट्र अध्ययन केन्द्र बनायें। राजरोगी कहलायें।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

परिचय

तहजीब-ए-मुनस्यार

जगदीश बृजवाल

हिमालय की गोद में बसा हमिनगरी, जिसे 'सारा संसार एक मुनस्यार' भी कहते है। उत्तर में हिमालय के तलहटी के मिलम ग्लेशियर से उदगम गोरी नदी निचले घाटी के में उतरकर वार-पार के बीचों बीच बहते मवानी-दबानी तक तथा पश्चिम में हीरामणि ग्लेशियर निकलने वाली नदी रामगंगा सीमा रेखा बनाते नाचनी, नौलड़ा तक मुनस्यारी तहसील का सीमांकन क्षेत्र है।

मुनस्यारी तहसील क्षेत्रफल की दृष्टि से कई जिलों से भी बड़ा है। जैसे जिला हरिद्वार। क्योंकि इस तहसील क्षेत्र की सीमा तिब्बत (चीन) तक जा लगती है। प्राचीन समय जोहार के शौका जनजाति तथा मुनस्यारी के मूल बरपटिया जनजाति के लोग जो यक्ष, किन्नर, किरात, नागवंशी तथा मंगोलियाड, मुख मुद्रा व तिब्बती बर्मी भाषा के समावेश से कुछ-न-कुछ सम्बन्ध अवश्य उनसे भी रहा है।

सदियों से इस क्षेत्र के शौका लोगों का व्यापार तिब्बत, कत्यूरी शासन, चंदवंश के बाद अन्त में ब्रितानी हुकूमत से भी रहा है।

जोहार के इतिहास में तीनों कालखण्डों का अनुशासित वर्णन दिखने को नहीं मिलता, ऐसे में पाठकों को कुछ भ्रम की आशंका बनी रहती है। जबकि जोहार का इतिहास तीन कालखण्ड में वर्गीकृत दिखाई स्पष्ट है-

प्राचीन काल- हल्दुवा-पिंगलवा युग, मध्य काल पनज्वारी युग, आधुनिक युग धामू रावत का जोहार घाटी में प्रवेश व पंनज्वारियों का अवसान। तीन काल खण्ड जोहार के समग्र इतिहास की जानकारी देते हैं। इनमें आपस में रक्त सम्बन्ध भी स्थापित हैं

अर्द्ध यायावरी जनजाति मौसम के अनुसार अपने प्रवास बदलते रहते थे किन्तु सन 1962 में तिब्बत पर चीन का अधिपत्य हो जाने के कारण शौकाओं का व्यापार बन्द हो गया था, सभी लोग बेरोजगार हो गये। नए रोजगार की तलाश में अब एक स्थान पर स्थायी भी रहने लगे थे। शिक्षा, नौकरी, पद प्राप्त कर आज पुनः अच्छी स्थिति में देश के कौने कौने में बस गये हैं।

यहाँ के लोगों का व्यापार समाप्ति के वाद धीरे-धीरे लोगों ने पलायन करना शुरू कर दिया था। वर्तमान में अब शौकाओं की जनसंख्या क्षेत्र में न्यून है, कुछ ही गाँव तक सीमित परिवार निवास करते हैं।

व्यापारी जो सदैव अपनी व्यापार को उन्नत बनाने के लिए मृदु भाषा, व्यवहार कुशल, मिलनसार बनने का प्रयत्न करता है सुबह से शाम तक अपनी वाणी में संयम, भाषा की सौहार्दता का विशेष ध्यान रखते है जो बाद में उसकी आदत व्यवहार में अवश्य शुमार हो गया होगा। किसी भी घर, परिवार में कोई भी व्यक्ति जो घर के लिए आर्थिक योगदान देता है वह घर का मुख्य व्यक्ति हो सकता है इस कारण घर परिवार में उनकी बातों को हमेशा परिवार तबज्जू देता है, उनकी बातों को लोग अमल में भी लाते हैं। व्यक्ति की वाणी की सौम्यता, व्यवहार में मधुरता परिवार के लिए भी तथा व्यवसाय के लिए भी संजीवनी का काम करता है। शायद कोई अनुमान न लगा पाये, पर उनकी तहजीब सबके लिए जीवनोपयोगी सिद्ध हो चुका था।

तहजीब, जिसे हम कहते हैं किसी भी संस्कृति, सभ्यता के अवयव आचरण, आचार-व्यवहार, सदभाव, प्रेम गुण-धर्म की सीख व्यक्ति को घर या समाज से ही मिलता है। परिवार बालक की सर्व प्रथम पाठशाला होता है जहाँ से बच्चा संस्कारवान बनकर बाहर की दुनिया में प्रवेश करता है। आपकी सहिष्णुताता आपके कई कामों को आसान बना देती है। शौकाओं का अपना व्यापार करने के एवज में उसे कई लोगों के साथ अपनी अच्छे सम्बन्धों को बढ़ावा देना पड़ता होगा, जिस कारण घर के सदस्य के साथ हो या बाहर के, वाणी में मधुरता यथावत रखनी पड़ती होगी, व्यापारी की मजबूरी सदैव तहजीब को बनाये रखना ही है। अन्यथा व्यापार में अवरोध आने की आशंका बनी रहती थी जिस कारण शौका व्यापारी को दैनिक जीवन में भी अपने पशुओं से लेकर परिवार व बाहर के लोगों से भी अच्छे व्यवहार सम्बन्धों को बनाये रखना आवश्यक था। इस कारण उसने अपने पास-पड़ोस, अपने बन्धु-बान्धवो के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार बनाकर अच्छे वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण योगदान अवश्य किया होगा।

जोहार घाटी में अतीत में निवास करने वाले लोग सभी जोहारी कहलाये जाते थे। किसी भी जाति धर्म का क्यों न हो, जोहार में निवास करने के बाद जोहारी ही कहलाए, अपनी बुद्धि, क्षमता अनुसार कार्य कर आपसी सामंजस्यता प्रेम सदभाव से अपने कार्यों में मशगूल रहे, अनुमान/कल्पना तो आज के लोगों का कथन और सोचना है, उसी प्रकार तहजीब, संस्कार अग्रिम पीढ़ी को तथा पीढ़ी दर पीढ़ी परिवार समाज को हस्तांतरण करते रहे हैं।

मुनस्यारी क्षेत्र के लोगों की ईमानदारी, विश्वास, स्वाभिमानी होने का प्रमाण तो सिद्ध है, यहाँ के लोग जुवान व उसूल के पक्के होते थे। सच्चाई, ईमानदारी, विश्वास के लिए कभी समझौता नहीं करते थे। तिब्बत व्यापार हेतु जाने वाले मार्ग में एक स्थान बोगडियार पड़ाव है, उससे कुछ नीचे दक्षिण दिशा की तरफ रारगारी नामक अति दुर्गम स्थल माना जाता है, सत्यता यह भी है कि शौका लोग व्यापार के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्री जो अपने पशुओं के पीठ पर लादकर तिब्बत तक पहुँचाते थे यदा-कदा उन्हें इन स्थानों में कहीं सड़क किनारे, गुफा आदि स्थान पर सुरक्षित मोटे कपड़े से (तिरपाल) ढक कर रख देना पड़ता था। अगले वर्ष उसे सुरक्षित सामान मिल जाता था, जो उस समय के समाज की अच्छी स्थिति की जानकारी देता है कि झूठ, चोरी-चकारी, बईमानी, अविाश्वास को समाज में कोई भी स्थान नहीं दिया गया था।

मुनस्यारी क्षेत्र में रहने वाले सभी जाति विरादरी के बीच जो प्रेम, मित्रभाव अतीत में दिखाई देती देती है वो अब कहाँ! हमेशा आपस में एक दूसरे की प्रति अटूट विश्वास व सम्बन्ध बनाए रखना अपना परम कर्तव्य समझते थे तथा सम्बन्धों की प्रागढ़ता पीढ़ी दर पीढ़ी भी निरन्तर चलती रही। अतिथि सत्कार करना इस क्षेत्र के लोगों को कहीं से सीखने की आवश्यकता न थी। अपने गुण की पहिचान वह बखान अपने मुँह से कभी नहीं किया।

आपसी सामंजस्यता, खाना-पीना, उठना-बैठना, बोलचाल जिसने आपसी समानता को बनाये रक्खा, क्षेत्र में सभी जाति धर्म के लोगों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य तहजीब-ए-मुनस्यार ने किया था तथा आपस में सदैव एक दूसरे का सहयोग कर काम आते रहे हैं, इस कारण मुनस्यारी क्षेत्र की लोगों की वाणी ने लोगों को ध्यान आकर्षित कर अच्छी परम्परा की नींव रख दी। इस बात की समझ अनुमान/कल्पना आज करते हैं तो क्षेत्र में आने वाली बाहरी लोग जो सरकारी कार्मिक, अध्यापक गण नियुक्ति, पदोन्नति में आकर दूर दराज गाँव में लम्बे समय तक ठहराव करते हैं तो उन्हें यहाँ के लोगों का आचार-व्यवहार में अपनत्वता झलकता है तभी यहाँ से अन्यत्र जाने के पर यदा-कदा जब उनके सन्देश मिलते तथा कभी मिलन हो जाने पर क्षेत्र तथा वहाँ रहने वाले लोगों की प्रशंसा करते नहीं थकते हैं।

तहजीब की आवश्यकता तथा बनाये रखना जो शौका समाज के अच्छे संस्कारों के गुण धर्म को विकसित करना था। विरासत में मिला तहजीब व प्रकृति का अमूल्य उपहार प्राप्त कर सदैव यहाँ के वाशिन्दे अपने को गौरवान्वित महसूस करते हैं।

ग्लेशियर की जड़ में बनी झीलों का इलाज जरूरी है

देहरादून। उच्चहिमालयी क्षेत्रों में ग्लेशियरों के मुहानों पर बनी बड़ी झीलों को समय से सावधानी पूर्वक तोड़ना जरूरी है ताकि जमा पानी की निकासी हो सके। वैज्ञानिकों का मानना है कि यदि समय रहते इस प्रकार बनी झीलों का इलाज नहीं किया गया तो यह भारी तबाही कर सकती हैं।

बताया गया है कि प्रदेश का आपदा प्रबधन विभाग इस मामले में नए सिरे से कार्ययोजना पर काम कर रहा है। प्रदेश के केदारनाथ में वर्ष 2013 की आपदा और वर्ष 2021 में चमोली की नीती घाटी में ग्लेशियर में बनी झीलों के टूटने से हुई तबाही से सबक लेते हुए इस बारे में गम्भीरता से विचार किया जा रहा है। प्रदेश में 300 खतरनाक झील बतायी गई हैं।

ज्योतिष की बातें - 134

11 जुलाई 2023 को बुध कर्क राशि में पश्चिम दिशा में उदय हो जाएगा। बुध के उदय, अस्त होने का उसके गोचरफल पर कोई तीक्ष्ण प्रकार का प्रभाव नहीं पड़ता है।

कामिका एकादशी व्रत- श्रावण कृष्णपक्ष एकादशी गुरुवार 13 जुलाई 2023 को कामिका एकादशी का व्रत रखा जाएगा। जो व्यक्ति सम्पूर्ण वर्ष केवल शुक्ल पक्ष की एकादशी का व्रत रखते हैं उनको भी चातुर्मास में कृष्ण पक्ष की एकादशी का भी व्रत रखना चाहिए अर्थात श्रावण, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक इन चारों महीने की कृष्ण पक्ष की एकादशी का भी व्रत रखना चाहिए।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

सम्यक विचार- 25

इलेक्ट्रिक सिटस्ट बनाम मैकेनिकल सिस्टम

पिछले कुछ वर्षों में एक नए प्रकार का कचरा उत्पादन प्रारम्भ हुआ है जिसको ई-कचरा कहा जाता है, अर्थात् इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रानिक उपकरणों का कचरा। यह कचरा पुराने अन्य प्रकार के कचरों से बहुत अधिक तीव्र गति से बढ़ रहा है। पूरे विव में करोड़ों टन ई-कचरा प्रतिवर्ष पैदा होता है। इसको समाप्त करने के लिए जमीन में गाढ़ने पर मिट्टी दूषित हो जाती है, फिर उसके आसपास का भूमिगत जल भी जहरीला हो जाता है। कुछ देश तो ई कचरे के विशाल पर्वताकार ढेर को समुद्र में फेंक देते हैं जिस कारण समुद्र में बहुत से जीव जन्तुओं का विनाश हो जाता है। यह कचरा पुराने पारम्परिक कचरे से बहुत अधिक जहरीला होता है।

इसकी मात्रा अब और भी तेजी से बढ़ने वाली है। क्योंकि बहुत सी गाड़ियाँ, कारें, बसें आदि यातायात के साधन अब बिजली से चलने वाले बनाए जा रहे हैं जिसमें बैटरी लगती है और घरों में उपयोग होने वाले इनवर्टर में भी बैटरी लगती है। ये बैटरियां हर वर्ष बदलनी पड़ती है। फिर करोड़ों अरबों की संख्या में ये बैटरियां कहाँ नष्ट की जाएंगी। एक बहुत बड़ी समस्या आगे चलकर इन बैटरियों से उत्पन्न होने वाली है। क्योंकि प्रदूषण का अन्तिम परिणाम होता है स्वास्थ्य का विनाश।

इस कचरे का एक ही समाधान है कि हम इलेक्ट्रिक सिस्टम के स्थान पर मैकेनिकल सिस्टम का उपयोग करें। एक छोटा सा उदाहरण- सेल से चलने वाली घड़ी के स्थान पर चाबी से चलने वाली घड़ी का उपयोग करें, सेल से चलने वाले बच्चों के खिलौनों की जगह चाबी से चलने वाले खिलौनों का उपयोग करें। इसी प्रकार जहाँ तक सम्भव हो इलेक्ट्रिक सिस्टम के स्थान पर मैकेनिक सिस्टम का ही उपयोग करें। मैकेनिक सिस्टम में प्रदूषण नहीं होता है और इलेक्ट्रिक सिस्टम में बिजली के उत्पादन, वितरण तथा उपयोग तीनों स्तर पर प्रदूषण उत्पन्न होता है। सरकार को भी इलेक्ट्रिक सिस्टम के स्थान पर मैकेनिकल सिस्टम को प्रोत्साहित करना चाहिए।

-सरल

शिक्षाप्रद दोहे

नन्दाबल्लभ पाण्डेय

1. नित परिश्रम करते रहें, इससे काम सफल हो जाय
   अब और तब मत देखिए, जिससे कार्य अपूर्ण रह जाय।
2. बन्दे इतना खाइये, जितना पेट समाय
   अपना पेट भी हल्का रहे, रोग दोष भी ना सताय।
3. अपना देह की जतन करें, ताकि काया निरोग रहाय
   व्यर्थ की चिन्ता छोड़ कर, ईश्वर भक्ति में ध्यान लगाय।
4. माता पिता गुरु की नित सेवा करें, इसी में चित्त लगाय
   उनकी निस्वार्थ सेवा करिके, अपना जीवन धन्य हो जाय।
5. तरुवर कबहु ना फल चखे, नदी ना पीवे नीर
   दीन जनों के हित कारणें, सन्त जन धरे शरीर।
6. स्वर्ण धन, पशुधन और धनों की खान
   जब होवे सन्तोष धन, सब धन धूरी समान।
7. मित्रता ऐसी ढूंढिए, जो दुःख दर्द में साथ निभाए
   कपटी मित्र कभी ना रखिए, जो जीवन भर दुःख दे जाए।

लोहाघाट में देवीधार महोत्सव

लोहाघाट। देवीधार में 5 दिवसीय देवी धार महोत्सव की धूम रही। रायनगर, चौड़ी, कलीगाँव एवं डैंसली से ग्रामीण जन माँ भगवती की यात्रा में शामिल हुए। मन्दिर की परिक्रमा के बाद आशीर्वाद लिया। शोभायात्रा में छोलिया दल सहित कलाकारों का आकर्षण भी रहा। बारिस के समय भी आस्थावान जुटे रहे और रात्रि जागरण सहित बच्चों की विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पढ़ाई दिखाने के लिये नहीं, ईमानदारी से करें

यूपीएससी पास साक्षी व मीनाक्षी की सीधी बात

हल्द्वानी। मुनस्यारी यूथ वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा देहरादून के बाद हल्द्वानी चैप्टर की शुरुआत करते हुए युवाओं से यूपीएससी परीक्षा में सफल साक्षी व मीनाक्षी से सीधी बातचीत करवाई। यूपीएससी परीक्षा में 444 रैंक में रही मीनाक्षी आर्य व 484 रैंक पर रही साक्षी बिष्ट ने युवाओं से सम्वाद करते हुए कहा कि पढ़ाई में ईमानदारी जरूरी है। पढ़ाई दिखाने के लिये नहीं बल्कि ईमानदारी से होनी चाहिये। युवाओं को पुस्तकों से जुड़ने के अलावा नई विधियों से भी सहायता मिल सकती है, इसके लिये सूझबूझ जरूरी है।

आयकर आयुक्त एन.एस.जंगपांगी, यूपीएससी पास साक्षी व मीनाक्षी, डॉ. ठाकुर सिंह मपवाल

मुल रूप से रानीखेत के खलना गाँव व हाल में दमुवाढूंगा की मीनाक्षी व मूल रूप से अल्मोड़ा के देवनगर दसोली वर्तमान पंचायत घर हल्द्वानी निवासी साक्षी ने युवाओं को अपनी शिक्षा व तैयारी के बारे में बताते हुए कहा कि अपने लक्ष्य को निर्धारित करने के अलावा असफलता से घबराना नहीं बल्कि अपनी कमियों को सुधारना जरूरी है। कैलाश धर्मशक्तू के संचालन में हुए समारोह में आयकर आयुक्त देहरादून नरेन्द्र सिंह जंगपांगी, प्रेम सिंह जंगपांगी, हरीश धर्मशक्तू, डा.एन.एस.पांगती, साक्षी बिष्ट की माता श्रीमती शोभा बिष्ट, डॉ. ठाकुर सिंह मपवाल, जिला पंचायत सदस्य जगत सिंह मर्तोलिया, इंजी. नरेन्द्र टोलिया, भूपाल सिंह मर्तोलिया ने अपने अनुभवों को साझा किया और बताया कि किन कठिनाईयों के साथ वह मुकाम पर पहुँचे। इससे पूर्व मीनाक्षी व साक्षी का सम्मान करने के साथ ही युवाओं ने सम्वाद किया

परिक्रमा

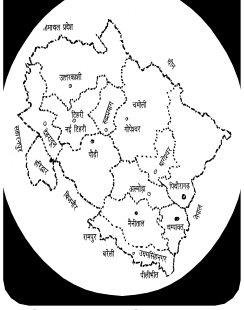

जोशी-अंडोला की पुस्तक का विमोचन

हल्द्वानी। उच्चशिक्षा निदेशक प्रो.सी.डी. सूठा ने निदेशालय में डॉ.विपिन चन्द्र जोशी एवं डॉ.हरीश चन्द्र अन्डोला द्वारा लिखित पुसतक कैमिकल एनालिसिस का विमोचन करते हुए कहा कि यह पुस्तक नई शिक्षा नीति के तहत लिखी गयी है। इससे विज्ञान के विद्यार्थियों को रसायन विज्ञान की बारीकियों को समझने में सहायता मिलेगी। डॉ.विपिन जोशी ने कहा कि कौशल विकास के रूप में यह पुस्तक विद्यार्थियों को मदद करेगी।

बिल्जू खेल मैदान में रोचक मुकाबला

मुनस्यारी। बिल्जू खेल मैदान दुम्मर में इस बार भी नव युवक क्लब द्वारा फुटबाल प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया। 17 से 28 जून तक चली प्रतियोगिता में तीस टीमों ने जोरदार प्रदर्शन किया। फाइनल मुकाबला ओल्ड स्टार मुनस्यारी की टीम जीतकर विजेता बनी जबकि वां बॉइज उपविजेता रही। सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का खिताब कैली लस्पाल रहे। विजेता उपविजेता टीम व खिलाड़ियों को मुख्य अतिथि भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के इंस्पेक्टर गोकुल सिंह लस्पाल व समाज सेवी हरीश चिराल द्वारा सम्मानित किया गया। बालिका प्रोत्साहन हेतु चार टीमों को निशुल्क रूप से टूर्नामेंट में प्रवेश दिया गया। जिसमें मुनस्यारी गर्ल्स-ए की टीम विजेता व टीम बी उपविजेता रही। प्रधान पंकज वृजवाल के दिशा निर्देशन में क्लब के अध्यक्ष नवीन वृजवाल गिरधर वृजवाल, जगदीश वृजवाल, दिगम्बर बृजवाल, धीरज बृजवाल सहित ग्रामीण उत्साह के साथ आयोजन में सहयोगी रहे। अन्त में पुर्ब्याल देवता का स्मरण करते हुए आभार प्रकट किया।

हाईवे पर भूस्खलन : चलना संभल-संभल कर

कई यात्रा मार्ग बन्द हैं

मानसून में कई पर्वतीय मार्ग बन्द हैं। हाईवे पर हुए भूस्खलन से यात्रियों को दिक्कत हो रही है। इन हालातों में यात्रा करने वाले सभी संभल कर चलें। बरसात के मौसम पर प्रशासन द्वारा पहले ही अलर्ट किया जा चुका है। बागेश्वर जिले के कौसानी भतेड़िया मार्ग, कपकोट के लीती-गोगिना जाने वाली सड़क पर बोल्डर गिरने से खतरा बना हुआ है। अल्मोड़ा-कोसी हाईवे पर स्यालीधार में मलबा आने का खतरा लगातार है।

गोपेश्वर के छिनका में भूस्खलन से बदरीनाथ हाईवे का करीब 150 मीटर हिस्सा ध्वस्त हो गया। काफी मलबा अलकनन्दा में समा गया है। ऐसे में यात्रियों को दिक्कत का सामना करना पड़ा है। मौसम देखते हुए पुलिस प्रशासन द्वारा बदरीनाथ धाम, जोशीमठ, पीपल कोटी, कर्णप्रयाग, चमोली, नन्दप्रयाग, गौचर में कई बार यात्रियों को रोकना पड़ा है। आपदा प्रबन्धन की ओर से हाईवे से मलबा हटाने के लिये तीन जेसीबी मशीनें लगाई गई हैं।

शहरों का हाल भी जलभराव से दिकदायी बना हुआ है। टनकपुर शहर में पहली बार सड़क में बेहिसाब पानी बहता दिखाई दिया। सितारगंज में काफी जल भराव हुआ है। किच्छा, काशीपुर, बाजपुर, जसपुर बाजार में भी जलभराव देखने को मिला। दरअसल नालियों पर अतिक्रमण के कारण पानी निकासी न होने से शहरों का हाल बुरा बना हुआ है।

चार वर्षीय इंटीग्रेटेड बीएड पाठ्यक्रम शुरु

पायलट मोड पर शुरु

नैनीताल। कुमाऊँ विश्व विद्यालय नैनीताल सहित देश के 42 अन्य विश्व विद्यालयों तथा अन्य शैक्षणिक संस्थानों में इस शिक्षा सत्र से पायलट मोड़ में प्रारम्भ होने जा रहे चार वर्षीय इंटीग्रेटेड बीएड पाठ्यक्रम की अभिसूचना जारी हो गई है। विवि के शिक्षाशास्त्र संकाय के प्रभारी संकायाध्यक्ष प्रो. अतुल जोशी के अनुसार शिक्षण सत्र 2023-24 प्रारम्भ होने वाले इस पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु इच्छुक छात्र-छात्राओं के चयन हेतु देशव्यापी आधार पर प्रवेश परीक्षा सम्पन्न कराने का दायित्व राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) को सौंपा गया है जिसके द्वारा निर्गत कार्यक्रम के अनुसार राष्ट्रीय सामान्य प्रवेश परीक्षा 2023 (एनसीईटी 2023) में सम्मिलित होने के इच्छुक उम्मीदवारों द्वारा 19 जुलाई 2023 (बुधवार) तक राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी की बेबसाइट डब्लुडब्लु डाट एनटीए डाट एसी डाट इन अथवा एचटीटी पीएस://एनसीईटी डाट एसएएमएआरटी एच डाट एसी डाट इन के माध्यय से आनलाइन आवेदन किया जा सकता है। प्रो. जोशी ने बताया है कि इस परीक्षा हेतु आवेदन करने के लिये सामान्य श्रेणी के उम्मीदवारों को 1200 रुपये, ओवीसी श्रेणी को 1000 रुपये एवं एससी एसटी और पीडब्लूबीडी व थर्ड जेंडर वर्ग के अभ्यर्थियों को 650 रुपये शुल्क जमा करना होगा। प्रवेश परीक्षा की तिथि की घोषणा बाद में की जाएगी। बताया कि उत्तराखण्ड में राष्ट्रीय सामान्य प्रवेश परीक्षा-2023 का आयोजन हल्द्वानी, देहरादून तथा हरिद्वार में किया जाएगा। कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल में प्रीपेटरी बी.एड. पाठ्यक्रम संचालित होगा जिसके तहत चार वर्षीय बीएए, बीकॉम तथा बीएससी के साथ बीएड की उपाधि प्रदान की जाएगी। इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने वाले अभ्यर्थियों को प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षण कार्य तथा रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। उन्होंने बताया कि आगामी शिक्षण सत्र से कुमाऊँ विश्वविद्यालय में उक्त पाठ्यक्रम संचालन हेतु शिक्षकों का चयन भी किया जा चुका है। इच्छुक अभ्यर्थी प्रवेश परीक्षा से सम्बन्धित अन्य विस्तृत जानकारी राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी की वेबसाईट डब्लूडब्लूडब्लू डाट एनटीए डाट एसी डाट इन अथवा एचटीटीपीएस://एनसीईटी डाट एसएएमए आरटीएच डाट एसी डाट इन से पाएंगे।

मुनस्यारी-धारचूला बिना प्रतिस्थानी के कार्यमुक्त न हों

निदेशक दौरा

मुनस्यारी। निदेशक माध्यमिक शिक्षा सीमा जौनसारी से क्षेत्र भ्रमण के दौरान पंचायत प्रतिनिधियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं ने मुलाकात की। मुनस्यारी धारचूला से बिना प्रतिस्थानी के प्राथमिक, जूनियर, माध्यमिक विद्यालयों से एक भी शिक्षक को बिना प्रतिस्थानी के कार्यमुक्त नहीं करने की मांग की। खण्ड शिक्षा अधिकारी सहित शिक्षकों के रिक्त पदों पर नियुक्ति के लिए सीमान्त क्षेत्र के विद्यालयों को वरियता देने का मामला भी उठाया। जिला पंचायत सदस्य जगत मर्तोलिया, मल्ला जोहार विकास समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मसक्तू ने निदेशक का स्वागत करते हुए कहा कि बिना प्रतिस्थानी के एक भी शिक्षक को कार्यमुक्त नहीं करने के लिए स्पष्ट आदेश जारी कर दें। उन्होंने खण्ड शिक्षा अधिकारी, उप खण्ड शिक्षा अधिकारी सहित प्रधानाचार्यों के रिक्त पदों पर तत्काल प्रभाव से नियुक्ति करने के लिए हस्तक्षेप करने की मांग उठाई। कहा कि विज्ञान, गणित, अंग्रेजी जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर रिक्त पदों के सापेक्ष नियुक्ति के लिए सीमान्त क्षेत्र मुनस्यारी तथा धारचूला को वरियता सूची में रखा जाए। राजकीय इण्टर कालेज मुनस्यारी में संस्कृत, संगीत, ब्यूटीशियन, सिलाई कढ़ाई, साइबर सैफ्टी विषय खोलने के साथ राजकीय बालिका इण्टर कालेज नमजला तथा राजकीय इण्टर कालेज उच्छैती में विज्ञान संकाय को विधिवत शुरु करने के लिए निदेशक ने मुख्य शिक्षा अधिकारी को प्रस्ताव बनाने का आदेश दिया।

राजकीय हाई स्कूल बुई में शिक्षकों के रिक्त पदों पर नियुक्ति के लिए निदेशक ने अपर निदेशक नैनीताल को आदेशित किया। मल्ला जोहार विकास समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मसक्तू ने हिमाचल की तरह स्थानान्तरण नीति बनाने के लिए पहल करने की मांग की। निदेशक माध्यमिक शिक्षा ने आश्वासन दिया कि सीमान्त क्षेत्र मुनस्यारी तथा धारचूला में शिक्षकों के रिक्त पदों पर नियुक्ति के लिए विशेष प्रयास किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इसके लिए शिक्षा विभाग के अधिकारियों को निर्देश जारी किए जाएंगे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

राजनीति के घोल में सना है उत्तराखण्ड

सीटों की स्थितियों का अनुमान लगा रहे हैं नेतागण

पि.हि. प्रतिनिधि

पर्वतीय प्रदेश उत्तराखण्ड राजनीति के घोल में सना हुआ है। पक्ष-विपक्ष की हर आहट पर छोटे-बड़े नेता अपना अनुमान लगा रहे हैं और निकाय चुनाव से लेकर लोकसभा चुनाव तक के गणित व फार्मूले पर चर्चा होने लगी है।

प्रदेश की धामी सरकार कैसी चल रही है सवाल पर विपक्ष घेर रही है जबकि पुष्कर सिंह धामी लगातार जनता के मूड के हिसाब से अपनी चाल चल रहे हैं। सरकार के कार्यों का उल्लेख करते हुए धामी ने भरोसा किया है कि भाजपा की बम्पर लहर है। कांग्रेस कर्नाटक चुनाव का उदाहरण देते हुए कार्यकर्ताओं से जुटने की अपील कर ही है। देशभर में विपक्ष की एकजुटता की बात कही जा रही है। उत्तराखण्ड के परिप्रेक्ष्य में देखें तो बहुत ही सीधी सी तस्वीर इस समय दिखाई दे रही है जिसमें एक ओर मोदी चेहरा है दूसरी ओर विपक्ष का तालमेल।

भाजपा चाहे कितनी ही रटन्त कर ले उसके पास नरेन्द्र मोदी मुख्य हैं जिनको आगे कर जनता को भरोसा दिलाया जा रहा है। प्रदेश की पाँच लोकसभा सीटों पर अभी तक भाजपा बेहद मजबूत है क्योंकि इसका संगठन लगातार कार्य कर रहा है। ऐसे में विपक्ष के सामने बहुत बड़ी चुनौती है कि वह कितनी एकजुटता कर पाता है। बात निकाय चुनाव की करें तो आने वाले दिनों में सीटों में आरक्षण की स्थिति क्या होगी इसपर नेताओं का ध्यान है।

पिघलता हिमालय स्थापना के ४६ वें वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं-

लक्ष्मण सिंह लमगड़िया

संस्थापक अध्यक्ष/संरक्षक

माँ बाराही मन्दिर कमेटी देवीधुरा

पिघलता हिमालय स्थापना के ४६ वें वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं-

मनोज महरा

सामाजिक कार्यकर्ता

गंगोलीहाट

पिघलता हिमालय स्थापना के ४६ वें वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं-

मुकेश रावल

वरिष्ठ कांग्रेस कार्यकर्ता

गंगोलीहाट

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय स्थापना के ४६ वें वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं-

बहादुर सिंह क्वीरियाल
टकाना, दरकोट
मुनस्यारी

पी.बी.बोरा
पी.बी.कलैक्शन, थाना रोड
बेरीनाग

दीपक सिंह बिष्ट 'परिवर्तन'
संस्थापक
राष्ट्रीय सनातन जागरण सेना,
देवीधुरा (चम्पावत)

डॉ.मंगल सिंह मर्तोलिया
रिटा.आई.जी.
खुशहाल हाउस, लक्ष्मी बिहार
हल्द्वानी

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

होटल माँ नन्दादेवी
एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल
एवं जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

सप्ताह के पर्व

आषाढ़ कृष्ण पक्ष
13 जुलाई- कामिका एकादशी व्रत
15 जुलाई- शिवरात्रि जागेश्वर मेला
16 जुलाई- हरकाली डिकर पूजा
17 जुलाई- हरेला काटना(श्रावण)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती
फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते-
जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)